।। अलोकी ग्रंथ ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१-१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

।। अथ अलोकी ग्रंथ लिखंते ।।

।। साखी ।।

सिख बुजे गुरूदेवजी ।। हंस जाय किम मोख ।।
केती सुन्ना बिच मे ।। कोण कोण सा लोक ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को शिष्य पुछ रहा है कि हे गुरुदेव जी,हंस मोक्ष में कैसे जाता है ? मोक्ष देश में पहुँचने तक बीच में कितने शुन्य लगते है ? तथा बीच में कितने देश लगते है ?।।१।।

केही कहे सुन्न अेक हे ।। केही कहे अनेक ।।
सो मोय बरण सुणाव जो ।। तम आया सब देख ।।२।।

कई ज्ञानी,ध्यानी,बताते है कि मोक्ष देश को पहुँचनेतक एक ही बडा शुन्य लगता है,तो कई ज्ञानी,ध्यानी बताते है की बीच में अनेक शुन्य लगते है । हे गुरुदेवजी आप देखके आए हो इसलिए आपही मुझे मोक्ष के बीच में कितने शुन्य लगते है, यह वर्णन करके बताओ ।।।२।।

चोपाई ।।

साची लगन जीणा घट लागे ।। गुरूगम साची भरम न जागे ।।
लोक लोक निरणा सब जाणुँ ।। सरब सुन्ना का भेद पीछाणुँ ।।३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने शिष्य को कहाँ की मैं सभी लोक का सभी निर्णय जाणता हूँ परंतू जिस के घट में मोक्ष पाने की सच्ची लगन है व गुरु अनुभव पे पूर्ण विश्वास है याने ही गुरु अनुभवपे किसी प्रकारका भ्रम नही है उसीको मेरा बताया हुवा ज्ञान समझेगा । ।।३।।

गुरूगम जीसा लोक जन जावे ।। मोख पदारथ हात न आवे ।।
मोख पद का सत्तगुरूदाता ।। लोक लोक का सन्त बिधाता ।।४।।

गुरु पहुँच जैसे होगी वैसे संत उस देश में जाते है । मोक्ष पद के दाता सतगुरु होते है । सतगुरु जब तक नही मिलते तब तक सतगुरु छोड्के अन्य गुरु करने से मोक्ष पदारथ हाथ में नही आता । मोक्ष पद छोड्कर अन्य अनेक लोक है । उन लोको को पहुँचानेवाले सतगुरु छोड्कर अनेक संत होते है । वे संत अपने-अपने लोक के विधाता होते है ।।।४।।

अेक अलोकी ग्रंथ कहुँ तोई ।। लोक लोक न्यारा सब जोई ।।
लोक लोक का सुख हे न्यारा ।। से म्हे बरण सुणाऊँ सारा ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है कि मैं एक अलोकी ग्रंथ तुम्हें बताता हूँ । मैंने सभी लोक कैसे न्यारे-न्यारे है तथा उन सभी लोको के सुख अलग-अलग कैसे है यह देखा है । वे सभी अलग-अलग लोक तथा उन अलग-अलग लोकोके सुख तुम्हें पुर्ण वर्णन करके बताता हूँ ।।।५।।

कोटक सुन्ना चूर कोई जावे ।। से हंसा अमरापूर पावे ।।

कोट सुन्ना का बिवरा दाखुं || लोक लोक का सुख सब भाखु ||६||

जो हंस करोडो शुन्यका उलंघन कर जायेगा वही अमरापूर पाएँगा । अमरापूरके पहले लगनेवाले करोडो शुन्यका विवरण तथा सभी लोकोका सुख मैं तुम्हें बताता हूँ,वह लगन से सुणो ।।।६।।

केवळ भक्त उदे जब होई || प्रगटे नांव नख चख सोई ||
केवळ भक्त करे जन सूरा || शिर पर धारे सतगुरू पूरा ||७||

जब कैवल्य भक्ती हंसके घटमें उदय होगी तब उस हंसके घटमें नखसे चख तक निजनाव प्रगट होता । यह कैवल्य भक्ती जो शुरवीर संत होगा वही करेगा । ऐसा संत अपने सिरपर अन्य गुरु न धारण करते सतगुरु धारण करता ।।।७।।

सतगुरू सत्ता नांव घट जागे || सरवण सुण राम धुन लागे ||
इमृत धारा सुंगधी सीरा || द्रब नेण खुल्या दोय हीरा ||८||

सतगुरु की सत्ता से उस हंस के घट में निजनाव जागृत होता । अपने श्रवणों से सतगुरु के मुखार बिंद से राम नाम सुणतेही मुख से राम नाम की धुन शुरु हो जाती है । ऐसे हंस के शरीर में अमृत की तथा सुगंध की धारा चलने लगती व उस हंस के घट में हिरे जैसे दो नेत्र खुल जाते है ।।।८।।

कंठ सुन बिच हरजन झुले || सुरज चार कळी चहुँ फूले ||
रसणा उलट कंवळ मे देखी || दिखे दोय मुख तो अेकी ||९||

वह हरीजन कंठ के शुन्य में झुलता है वहाँ चार पंखुडीयों का कमल चार सुर्यो के प्रकाश इतना खिलता है । जीभ मुख में एक व कंठ कमल में एक इसप्रकार दो जीभ राम उच्चारते दिखाई देने लगी मतलब मुख तो एकही दिखाई दे रहा था परंतू रसना मुख में एक व कंठ में एक ऐसे दो दिखाई दे रही थी ।।।९।।

हिरदे सुन हरिजन बासा || कळीयां सूर आठ प्रकासा ||
पेम हिलोला आतम जागी || नव तत्त देह रटे लिव लागी ||१०||

संत कंठ कमल उलंघन करके हृदयके सुन्न मे बास करते । वहाँ आठ शुन्यो के प्रकाश इतना आठ पंखुडीयों का कमल दिखाई दिया । वहाँ प्रेम की लहर आकर आत्मा जागृत हुई । नौ तत्व देह रटन करने लगी व उस नौ तत्व के देह को रटने की लीव लग गई ।।।१०।।

देह मे देह सुरत मे सुरत || हिरदा बिचे मन्डी अेक मुरत ||
मध सुन्न बिचे भलक्या नूरा || सोळे कळी दिपे ससी सूरा ||११||

इस शरीर में ही शरीर दिखाई देने लगा तथा सुरत में ही सुरत दिखाई देने लगी और उसके आगे मध्य शुन्य में सोलह कलीयों का कमल झलकने लगा । उस कमल से सोलह सुर्योका प्रकाश चमकने लगा ।।।११।।

नाभ सुन्न घर संत पधारे ।। कळी बतीस तपे रवि सारे ।।
सुखमण घटा घोर घण लागी ।। देहे बिराट बिण ज्युं बागी ।।१२।।

वहाँ से निकलकर संत नाभी कमलके घर आएँ । वहाँ ३२ पाकली का कमल था । उस कमल से बत्तीस सुर्यो का प्रकाश तपने लगा । वहाँ सुषमणा का घोर घरनाट होने लगा तब यह पुर्ण शरीर बैराट विणा के जैसा बजने लगा ।।।१२।।

झरना झरे पिवे बन सारा ।। ब्रम्हन्ड गुंजे शब्द गुंजारा
गुदा सुन्न घर हरजन पूगा ।। चोसंट कळी सूर ससी ऊगा ।।१३।।

जैसे झरने झरनेसे पुर्ण बन पाणी पिता है इसीप्रकार घटमें शब्दके गुंजारसे ब्रम्हांड गुंजने लगा । वहाँ से गुदाघाट पर जाकर पहुँचा । वहाँ चौसट पंखुडीयोंके कमलमें चौसट सुर्य व चंद्र उगे । ।।१३।।

सात लोक सुण सपत पयाळा ।। सतगुरू आगे शब्द उजाळा ।।
साते सरूप अंदेसो नाही ।। ज्यां त्यां वाज गेब गुरू माही ।।१४।।

वहाँ पातालके सात लोक दिखने लगे और आगे सतगुरु दिखाई देने लगे व शब्द का उजाला दिखने लगा । सतगुरुका स्वरुप साथमें रहनेके कारण कहीपे भी व कभी भी किसी भी प्रकार का संशय खडा नही हुआ । जहाँ तहाँ गेबाऊ गुरुकी आवाज सुनाई देती थी । इसकारण कोई संशय उत्पन्न नही होता था ।।।१४।।

ताळा ताक शब्द ही खोले ।। रंरकार आगु धुन बोले ।।
अळा पींगळा सुखमण धारा ।। तीनु बहे संत की लारा ।।१५।।

आगे लगनेवाले सभी दरवाजे और ताले यह शब्द ही खोलने लगा और इस ररंकार शब्द की ध्वनी आगे बोलने लगी । इडा,पिंगडा व सुषमना,ये तीनो धाराएँ संतके साथ में चलने लगी । ।।१५।।

सातु सुन्न लोक तज दीना ।। पिछम दिसा का रस्ता लीना ।।
पिछम सुन्न घर संत जन जुंझे ।। फुल्या कंवल इसी बिध सुजे ।।१६।।

सातो पाताल के शुन्य तथा लोक छोड दिए व पश्चिम के देश का रास्ता पकड लिया । पश्चिम वे शुन्य के घर जाकर संत जुंझने लगे । वहाँ कमल खिला ऐसा दिखाई देने लगा ।।।१६।।

आठ छबीस कळी जां भ्यासे ।। पांख पांख पर सूर प्रकासे ।।
सुन्न इकीस चूर जन आया ।। मेर सुन्न घर नोपत लाया ।।१७।।

उस कमलके प्रत्येक पंखुडी पर एक-एक सुर्य,इसप्रकार से एक सौ अठ्ठाईस सुर्यो का प्रकाश दिखाई देने लगा । वहाँ से इक्कीस शुन्य (पीठ के रीढ के मणीयों)का छेदन करके आगे मेरु शुन्य को पहुँचा । वहाँ मेरु शुन्य में नोपत याने बडा चौघडा बजने लगा ।।।१७।।

मंमकार माया यां त्यागी ।। रंरकार आगु धुन लागी ।।

एक डंक्यो बाजे एक घाही ।। लोक लोक मे बटे बधाई ।।१८।।

वहाँ मेरु में र और म इन दो अक्षरों में से म अक्षर छुट गया । जैसे पहले राजा लोको के राज में राजा की सवारी निकलती थी तब घोडेपर नगाडा रखकर उस नगाडे पे एक डंका बजाते है वैसा एक डंका बजने लगा और आगे के हर एक लोकोंमें हमारे पधारने की बधाई याने शुभ समाचार एक दुसरे को देने लगे ।।।१८।।

सब देवत सामा चल आवे ।। जे जे बाणी कळस बधावे ।।
ज्युं दुनीया राजा कूं माने ।। युं देवत संत जन कूं जाने ।।१९।।

उन लोगोके सर पे कलस लेकर सभी देवता संत के सामने चलकर आने लगे और संत का जयजयकार करने लगे । जैसे राजा को सारी दुनीया आदर सन्मान करती वैसे ही संत को सभी देव मानते है ।।।१९।।

ईन्द्र लोक ब्रम्ह लोक ज आवे ।। बिस्न लोक मे बिसन बधावे ।।
तप लोक सत लोक ज मांही ।। जन लोक जे जे होय जाही ।।२०।।

रास्ते में इंद्र,ब्रम्हा,विष्णू,महेश के लोक आए । जन,तप,सत,महर ऐसे स्वर्ग के सातो भवन आए । इन सभी लोकों मे संत का जयजयकार हुआ व संत के आने प्रित्यर्थ उत्सव किया । ।।२०।।

मेर लोक ये सातुं भवना ।। लोकी लोक तेज तप दूणा ।।
दूणा भाग तेज तप सारा ।। सेस लाख क्या क्रोड बिचारा ।।२१।।

हर लोक में पहले लोक के अपेक्षा दुगना प्रकाश देखा । एक दुसरे से दुगना भाग्य,दुगना तेज और दुगना ही तप दिखाई दिया । ऐसे हजारो लक्ष्य करोंडे का प्रकाश देखा ।।।२१।।

सुरज च्यार सुं गिणती कीजे ।। लोक लोक दुणा गिण लीजे ।।
शब्द तेज सब ही सुं न्यारा ।। रवि ऊगा दीपग ज्युं सारा ।।२२।।

सबसे पहले के कंठ शुन्य में चार सुर्यो का प्रकाश होता है । वहाँ से प्रत्येक लोको मे दुगुना गणीत करके गिन लो । पारब्रम्ह तक हिसाब किया तो हजारो लक्ष्य कोटी होता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की सतशब्द का तेज इन सभी तेज से न्यारा है । जैसे सुर्य के तेज के सामने दिपक का तेज दिखाई देता है वैसा सतशब्द के सामने हजारो करोड लक्ष्य सुर्यो का प्रकाश दिखाई देता था ।।।२२।।

संत तेज बरण्यो नही जावे ।। शब्द तेज जन मांय समावे ।।
ज्युं सुरज को तपसी होई ।। ज्यां की निजर न झेले कोई ।।२३।।

संत मे प्रगट हुए तेज का वर्णन करते नही आता । जैसे सुरज का तपस्वी होता है व ऐसे तपस्वी के नजर से कोई नजर मिला नही सकता । उसीप्रकार संत के ब्रम्ह तेज को माया तथा पारब्रम्ह सह नही सकते ।।।२३।।

द्रब नेण खुल्या घट मांही ।। दिन दिन तेज बढतो जाही ।।

दिव्य तेज नेणा बिच भारी ।। ओर तेज की कुंण चिकारी ।।२४।।

दिव्य दृष्टी घट में खुल जाती है । उस दिव्य दृष्टी में तेज दिन प्रतिदिन बढता है । ऐसे प्रगटे हुए दिव्य तेज के आगे अन्य माया ब्रम्ह के तेज की जरासी भी तुलना नही बनती ।।।२४।।

नेण पूतळी मांय समावे ।। घर असमान दिष्ट मे आवे ।।
युं जन कुं सारो जुग सुजे ।। तीन लोक चवदा भवन बूजे ।।२५।।

जैसे सुरज का तेज त्राटक ध्यानी के आँखों में समा जाता है व उसे दृष्टी में धरती आकाश आती है । इसीप्रकार संत के दृष्टी में सतस्वरुप ब्रम्हतेज समा जाता है,इसकारण संत को तीन लोक चवदा भवन ऐसा पूर्ण जग बारीक बारीक नजर मतें आता है ।।।२५।।

अब त्रिबेणी सुंण संत बिराजे ।। येक लख सूर तपे उण छाजे ।।
मंगळ गावे बजे बोहो बाजा ।। सब पुर दोड़े दरसण काजा ।।२६।।

जब संत त्रिवेणी में जाकर बैठता है तब त्रिगुटी में एक लक्ष सुर्य का तेज प्रगटता है । त्रिगुटी में संतोके आगमन पे मंगल गाते है । अनेक प्रकार के बाजे बजाते है ऐसा संत का स्वागत करते है व सभी पुरीयो के देवता संत के दर्शन के लिए दौड लगाते है ।।।२६।।

हीरा चोक झिगा मिग लागी ।। इम्रत बूंद जोत रवि जागी ।।
अळा पिंगळा पाव पखारे ।। सुखमण आरती आण उतारे ।।२७।।

वहाँ हिरो के चौक पे हिरो की झगमगाट देखी । वहाँ अमृत के बूँद पड रहे थे, वे अमृत के बूँद सुरज के प्रकाश से सुहावणी ज्योतीयों के समान लुभावणी लग रही थी । वहाँ इडा,पिंगला,मेरे पैर धोने लगी व सुखमना मेरी आरती करने लगी ।।।२७।।

ज्युं सिख साखा सतगुरू की मेहमा ।। युं पुजे त्रुगटी की धामा ।।
तीन लोक का अे सुख त्यागे ।। तेरे लोक त्रुगटी आगे ।।२८।।

जैसे जगत में सतगुरु की शिष्य शाखा सतगुरु की शोभा करते है वैसे ही संत को त्रिगुटी के धाम मे देवता पुजते है । संत त्रिगुटी में मिलनेवाले तीन लोक के सबसे भारी सुख त्याग देते है व त्रिगुटी के आगे के तेरा लोको के लिए प्रयाण करते है ।।।२८।।

तेरा लोक बरण कहुँ सारा ।। सुन्न सुन्न बिच धाम नियारा ।।
त्रुगुटी में पांचु सुख पावे ।। मे माई देवत सुख आवे ।।२९।।

मैं तुम्ह उन तेरा लोकों का तथा हर शुन्य के अलग अलग धाम का वर्णन करके बताता हूँ । त्रिगुटी के धाम में पाँचो विषयो के सुख है । त्रिगुटी के आगे पहला महामाया का लोक है । उस महामाया के लोग में देवता के लोग में जो सभी सुख रहते वे सभी सुख मिलते ।।।२९।।

पर गत लोक पेम घट आणे ।। जोत लोक जोती सुख माणे ।।

अर्थकर्ते : सतस्वरुपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामस्नेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र

अजर लोक मे अलख बिराजे ।। अणंद लोक में नाद ज गाजे ।।३०।।

उस महामायाके आगे दुसरा प्रकृती का लोक है वहाँ सभी के घटमें हर किसी के प्रती प्रेम है । उस प्रेम के सुख में वहाँ के लोक मग्न रहते है । प्रकृती के आगे तीसरा ज्योती का लोक है । उस ज्योती के लोक में ज्योतीयों के अनेक प्रकार के सुख है । वे सुख वहाँ के लोक भोगते और मस्त रहते है । ज्योती के आगे चौथा अजर लोक है । उस अजरलोक में अलख शब्द की हमेशा गुंजार होती है । उसके आगे पाँचवा आनंद लोक है । वहाँ एक प्रकार का नाद होता है । वह नाद वहाँ रहनेवाले लोगो की बहोत प्रिय लगता है ।।।३०।।

बजर लोक मे ब्रम्ह ही पाया ।। चेतन स्वाद सभी वां आया ।।
इखर लोक संमाद लगाई ।। अनहद ताक खोल जन जाई ।।३१।।

उसके आगे वज्रलोक लगता है । वज्रलोक में ब्रम्ह मिलता है । वहाँ पे चैतन्यका स्वाद मिलते रहता है । उसके आगे सातवा इखरलोक है । उस इखरलोक में समाधी लग जाती है । इखरलोक में समाधी का सुख मिलते रहता है । उस इखर लोक के आगे आठवा अनहद का लोक है । उस अनहद लोक का दरवाजा संत शब्द से खोलते है व अनहद के लोक में पहुँचते है । ।।३१।।

एक निरंजन ब्रम्ह लोक निराकारी ।। तेजी तेज तपे बोहो भारी ।।
कोटक सूर उदे प्रकासा ।। नव तत्त देह भई वा नासा ।।३२।।

उसके आगे नौवा निरंजन का लोक है । उस निरंजन लोक के आगे दसवाँ निराकार का लोक लगता है । उस निराकार के लोक में बहुत भारी तेज है । वहाँ करोडो सुरज का प्रकाश उदय हुआ दिखा है । उस निराकारके लोकमें नौ तत्वलिंग शरीर का नाश होता है ।।।३२।।

लिंग सरीर गल्या जिण जागा ।। सुरत रूप चल्या जन आगा ।।
अब सीव लोक मे आ बिध जाणी ।। ज्युं सायर मे बुन्द समाणी ।।३३।।

नौ तत्व लिंग शरीर गलते ही हंस सुरतरुपी काया से आगे चलता है । आगे संतको ग्यारहवाँ शिवलोक लगता है । जैसे सागर में पानी की बूँद मिल जाता है,उस तरह हंस शिवब्रम्ह में मिल जाता है ।।।३३।।

जीव सीव एको होय जावे ।। नींद सुखोपत ज्युं सुख आवे ।।
साहिब अंछ्या खेल पसारे ।। जलम धरे ज्या सुख दुख लारे ।।३४।।

शिवब्रम्ह में जीव और शिव एक हो जाते है । जीव को वहाँ सुषुप्ती के निंद समान सुख आता है परंतू जब मालिक की सृष्टी रचना की इच्छा होती है तब वह जीव माया में आकर फिर से जन्म लेता है और जन्म लेने कारण उस जीव के पहले के किए हुए कर्मो के प्रमाण से जीव के पिछे सुख-दु:ख के भोग लग जाते है ।।।३४।।

ज्युं तरबीज मिल्या घर मांहि ।। बिरखा समे ऊग सब जांही ।।

अब महा सुन्न घर जायर पुगा || कोट कळी कोट रवि ऊगा ||३५||

जैसे गर्मी के दिनो में पेडो के घासो के सभी बिज जमिन में मिल जाते है । वे बीज जमिन में खोजनेपर कही भी नही मिलते परंतू जमिनपर बारीष का पानी पड्ते ही वे सभी बीज उग जाते है व वे बीज जिस पेड के रहते वैसे ही पेड उग जाते है । ऐसे ही यह जीव भी शिवब्रम्ह से निकलकर माया में जन्मते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है अब मैं शिवब्रम्ह के आगे महाशुन्य में जाकर पहुँचा । वहाँ करोडो पंखुड्यिों के कमल में करोडो ही सुर्य उदित हुए ऐसा दिखा ।||३५||

इम्रत कुंड पीवे जळ नावे || द्रिब रूप देही बण जावे ||
सुरत रूप तजी याँ काया || द्रिब रूप जन होय सिधाया ||३६||

वहाँ अमृतके कुंड भरे हुए है । वहाँ वह अमृत ही सभी पिते है और अमृत के ही पानी से सभी लोग स्नान करने है उस अमृत के पिनेसे और स्नान करने से देह दिव्यरुप बन जाता है । जो निराकारी लोक से सुरतरुपी काया यहाँ तब आई थी उस सुरतरुपी काया को भी संत यहाँ छोड देते और दिव्यरुप काया धारण करके आगे चलते ।||३६||

दोहा ||

इम्रत बून्द कण जडे || बरसे अमोलक हीर ||
हंस बेठा सुखरामजी || सुन्न सागर की तीर ||३७||

वहाँ अमृत के बूँदो के कण झड्ने लगे और अमोलक हीरों की वर्षा होने लगी । इसप्रकार से हंस बारहवें शुन्य सागर के किनारे जाकर बैठ गया ।||३७||

सुन सागर आगे बसे || पार ब्रम्ह को लोक ||
वो लांग्या सुखराम केहे || हंस पहुँते मोख ||३८||

इस शुन्य सागर के आगे तेरहवाँ पारब्रम्ह का लोक है पारब्रम्ह के लोक का उल्लंघन करने पर हंस मोक्ष में जाता है ।||३८||

ज्यां जिंग शब्द धुन होय रही || झिल मिल जोत अपार ||
अब हंसा सुखराम कहे || पुंथा दसवे द्वार ||३९||

उस लोक में जिंग शब्द की ध्वनी हो रही है और ज्योती की अपार झिलमिलाहट हो रही है । इसप्रकार जीव सभी शुन्य उलंघन करके दसवेद्वार पर जाकर पहुँचा ।||३९||

चोपाई ||

दसवे द्वार समाधी होई || मुख सांसा शिंवरण नही कोई ||
सेजा सिवरण जिण घर आया || रूम रूम रसणा लिव लाया ||४०||

उस दसवेद्वार जानेपर समाधी लगती है । वहाँ पहुँचनेपर मुखसे स्मरण करनेकी विधी रहती नही । वहाँ बिना मुखसे सहज में याने अपने आप रोम रोम में लीवभरी रसना चलती है ||४०।

सत स्वरूप साहिब वां क्वावे || सरब लोक जा को जस गावे ||

वे सिरजण हार सकळ का भाई ।। ज्यां सु आ अंछया चल आई ।।४१।।

दसवेद्वारमें पहुँचनेपे जिसे सभी लोक सतस्वरुप साहेब कहते है वह प्रगट होता है । इस सतस्वरुप साहेब की तीन लोक चवदा भवनपे सभी लोक जस गाते है । वह सतस्वरुप साहेब सभीका सिरजणहार याने उत्पत्ती कर्ता है । उसीसे यह इच्छा याने माया चल आई है ।।।४१।।

उण अंछया रा सकळ पसारा ।। तीन लोक चवदे भवन सारा ।।
जन सुखराम समाधी पुंथा ।। अनंता ही दीपग घट में जूतां ।।४२।।

उस इच्छा का सभी पसारा है । तीन लोक चवदा भवन ये सभी उसीका पसारा है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जब मैं दसवेद्वार में समाधी में पहुँचा तब अनंत ही दिपक इस घट में लग गए ।।।४२।।

सब घट मांय शब्द उजीयाळा ।। जुरा मरण जीत्या जम जाळा ।।
सत्तगुरू पदवी जिणा कुंछा जे ।। दसवे द्वार शब्द धुन गाजे ।।४३।।

इस सारे घट में शब्द का प्रकाश हो गया और आदि,व्याधी,उपाधी,बुढापा,तथा जन्मणा–मरणे का दु:ख ऐसी सभी यम की ज्वालाएँ जीते गई । मेरे दसवेद्वार में शब्द की ध्वनी गरजने लगी । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जिसके दसवेद्वार में शब्द की धुन लगती है उन गुरु को ही सिरजणकार से सतगुरु की पदवी मिलती है ।।।४३।।

वे जन मिलता ही जीव जागे ।। भरम करम मन का सब भागे ।।
वे जन चाल जिणा घर आवे ।। सूतां हंसा शब्द जगावे ।।४४।।

ऐसे संत जीवो को मिलते ही जीव जागृत होते है । उन जीवो के भ्रम,कर्म तथा मन व पाँच वासना के सभी विकार भाग जाते है । वे संत जिसके घर जाते है उसके घर के सोए हुए याने अज्ञानता में पडे जीवो को निर्भय शब्द सुनाकर जागृत करते है व उन्हे अनंत शुन्य उलंघन करके दसवेद्वार पहुँचने का भेद देते है ।।।४४।।

युं अे सुन्ना चूर कोई जावे ।। से हंसा भव जळ नही आवे ।।
सुन्न बिच सुन्न बोहोत हे भाई ।। में बिरळी सी भाष सुनाई ।।४५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है अलोकी ग्रंथ में बताएँ हुए शुन्य को जो उलंघन करके जाता है वह फिर से कभी भी भवसागर में नही आता है । शुन्य में शुन्य बहोत है । उनमें से मैं बिरले ही शुन्य बताया हूँ ।।।४५।।

दोहा ।।

सरब लोक जे जे करे ।। बंदे विस्न महेस ।।
जब पुंथा सुखराम कहे ।। संत समाधी देस ।।४६।।

समाधी देशके रास्तेमें लगनेवाले सभी लोक संतकी जय–जयकार करते व ब्रम्हा,विष्णू, महादेव ये सभी संतकी वंदना करते है । इसप्रकार संत सभी देवताओंके लोक तथा सभी

शुन्य उल्लंघन करके समाधी देश में पहुँचते है ।।।४६।।

सिख वायक ।।

सरब लोक सुन्ना कही ।। कहयो शब्द को भेव ।।

अब अमर लोक का सुख कहो ।। वो किण टेके गुरूदेव ।।४७।।

शिष्य गुरुदेवजी से कहता की आपने सभी लोक व शुन्य समझाए व सतशब्द का भेद भी समझाया है । अब मुझे अमरलोक का सुख बताओ और वह अमरलोक किसके आधार से है वह गुरुदेवजी मुझे समझाओ ।।।४७।।

अमर लोक तो थिर सदा ।। नही आवे नही जाय ।।

किण सारे हंस पूंथसी ।। मुख शिवरण थक जाय ।।४८।।

शिष्य पुँछ्ता है की अमरलोक तो स्थिर है और वह माया के परे है । ऐसे अमरलोक में पहुँचानेवाला मुख का स्मरण भी दसवेद्वार पहुँचने के बाद थक जाता है व अमरलोक दसवेद्वार के परे है । मुख के स्मरण शिवाय दुजा कोई उपाय भी नही है फिर हंस अमरलोक कैसे पहुँचेगा? हे गुरुदेवजी,यह मुझे आपा समझाओ ।।।४८।।

गुरू वायक ।।

जन निपजे सुखराम कहे ।। मृत लोक के माय ।।

बावन गादी प्रेस्ता ।। ले ले हंस वां जाय ।।४९।।

मृत्यूलोक में जो संत निपजते है उन्हें अमरलोक जाने के लिए बावन गादी का फरीस्ता आता है व हंस को अमरलोक ले जाता है ।।।४९।।

चोपाई ।।

अमर प्रेस्ता बावन गादी ।। अमर लोक मे अमर सादी ।।

कोई केवळ ग्यानी संत कुवावे ।। जा को अंत समो चल आवे ।।५०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जीस केवल ज्ञानी संत का अंत समय आता है तब अमरदेश से बावन गादी का फरीस्ता संत को अमरलोक ले जाने को आता है । वह संत अमर लोक पहुँचता है,तब उसकी अमरलोक में माया के शब्दों में बताते नही आती ऐसी अमर किर्ती होती है ।।।५०।।

दसवों द्वार खोल जन जाही ।। अमर लोक मे बटे बधाई ।।

अमर प्रेस्ता संत पठावे ।। अमर बिवाण बेठ जन जावे ।।५१।।

वह संत नौ द्वार के परेका दसवेद्वार खोलकर अमरलोक जाने निकलता है । तब अमरलोक में वहाँ के सभी संत एक दूसरे को बधाई देते है व जहाँ के संत मृत्यूलोकसे अमरलोक जानेवाले संत को लाने के लिए अमर विमान के साथ अमर फरिस्ता भेजते है । उस अमर विमान में संत बैठकर अमरलोक जाता है ।।।५१।।

उण बिवाण हेटे नर आसी ।। पांचू ग्यान गेब का पासी ।।

उण बिवाण मे ओ गुण भाया ।। ज्युं हमाव पंछी की छाया ।।५२।।

उस विमानके निचे कोई मनुष्य आता है तो उसे मत्तज्ञान,श्रुतज्ञान,अवधीज्ञान,मनपर्चेज्ञान व कैवल्य ज्ञान ऐसे पाँचो ज्ञान कुद्रती किसी प्रकारकी कोई विधी न करते प्रगट हो जाते है । जैसे हुमायू पंछीके छायामें आनेवाला मनुष्य उसी शरीरसे राजा बन जाता है वैसे ही अमर विमानकी छाया पड़ने पे उस मनुष्य में पाँचो ज्ञान प्राप्त हो जाते है । ऐसा अमर विमान में हुमायू पंछी के छाया समान गुण है ।।।५२।।

भगवत समो मोख इधकारी ।। केवळ नांव रटे नर नारी ।।
क्रोड़ा हंस समे उण जाई ।। वो तो मारग सरू सदाई ।।५३।।

भगवंत समय याने मोक्ष में जाने का जब समय आता है तब मोक्ष देनेवाले अधिकार संत भरतखंड में प्रगटते है । ऐसे संत के सत्ता से नर-नारीयो के सभी भ्रम विनाश होते है व वे स्त्री-पुरुष कैवल्य नाम का रटन करने लग जाते है । ऐसे मोक्ष समय में करोडो हंस होणकाल त्यागकर मोक्ष में जाते है । मोक्ष में जाने का मार्ग हमेशा बहते रहता है ।।।५३।।

सरब लोक सुख हुवा उदासी ।। वे जन अमर देस का बासी ।।
अग्या करे प्रेस्ता जावो ।। वां संत जना कुं यां ले आवो ।।५४।।

जिन-जिन हंसों को होणकाल के मायाके सुख देनेवाले देशो से उदासी आती है,वे सभी हंस होणकाल के परेके सुखके देश याने अमरलोकके वासी होते है। वहाँ के संत ऐसे संतजनोको मृत्यूलोक से अमरलोक लाने के लिए अमर फरिश्ते को आज्ञा करते है। ।५४।

बावन गादी ढील न खावे ।। अेता हंस लोक उण जावे ।।
व्हे सादी अमरा पुर सारे ।। कोई म्रत लोक सुं संत पधारे ।।५५।।

संतो की आज्ञा मिलते ही वह बावन गादी फरिश्ता जरासी भी ढिलाई न बरतते हंसको अमरलोक ले जाता है । इसीप्रकार समय आने पे करोडो हंस अमरलोक जाते है । इन सभी मृत्युलोकसे पधारे हुए संतो की अमरापुरमे सभी ओर शोभा होती है,सभी ओर किर्ती होती है । ।।५५।।

सत का बस्तर ले पेराई ।। सत जळ सुं सिनान कराई ।।
दरसण करत न तिरपत होवे ।। इम्रत बाणी जन कुं भोवे ।।५६।।

यहाँ से जानेवाले सभी संतो को वहाँ के संत सत्तजल से स्नान कराते है व उन्हें सत्त का वस्त्र पहनाते है । यहाँ से जानेवाले संत को वहाँ के संत दर्शन कर कर याने देख-देखकर खुष होते है । यहाँ के संत को देख-देखकर वहाँ के संत तृप्त नही होते है । यहाँ से जानेवाले संत को बारबार देखते ही रहना चाहते है । यहाँ से जानेवाले संत को वहाँ के संत अमृत जैसे मिठी बाणी बोलकर मोहीत कर देते है ।।।५६।।

चवदे लोक छपन जुग जावे ।। मिलत मिलावत पार न पावे ।।
नित नित नवला नेह सदाई ।। एक निमक बिछड़ नही जाई ।।५७।।

इसप्रकार चौदह चौकडी याने छप्पन युग याने छःकरोड वर्ष यहाँ से जाने वाले संत को वहाँ

के संतो से मिलते-मिलते लग जाते है । इतना समय लगने पे भी संतो की आपस में मिलने की चाहणा पूर्ण नही होती । यहाँ से जानेवाले संतो को वहाँ के संतो से नित्य-नित्य नये-नये मोहीत करनेवाले स्नेह होते रहते है । ऐसे स्नेह के कारण एक-दुसरे से एक पलभर भी अलग नही होना चाहते ।।।५७।।

वाहाँ की सोभा काहा में गाऊँ ।। बस्त बानगी मांय बताऊँ वहाँ ।।
सुख की बिध कही न जावे ।। वो बिन टेके अधर सत्त धाम कुवावे ।।५८।।

वहाँ की शोभा मैं क्या वर्णन करुँ? मैं तो सिर्फ वस्तु का जैसे वस्तू से भरे हुये भंडार घर से नमुना दिखाते है उसी तरह नमुना दिखा रहा हूँ । वहाँ के सुखों की विधी जरासी भी यहाँ बताते नही आती । वह धाम माया के किसी आधार से नही है । ऐसा वह अधर धाम है याने स्वयंम के टेके का है । वह बिना टेके का अधर कैसा है यह जगत में समझाते नही आता । ऐसा समझाने के परेका वह धाम है । वह कल भी था,आज भी है व कल भी रहेगा ऐसा सतधाम है ।।।५८।।

अधर दीप अमर अे वासा ।। अनंता ही भाण भवन प्रकासा ।।
अमर बेराठ अेक सत थंबा ।। मोंती बडा सवा मण लुंबा ।।५९।।

वह दिप माया के दिप के समान किसी से टेका लेनेवाला नही है । वह अधर दिप है । वहाँ के रहनेवालो के निवास अमर है । वहाँके भवनोमे अनंत सुर्यो इतना सुहावणा व शांत प्रकाश है। वह बेराट अमर है। उसे एक सत का खंभा है याने सत का आधार है याने सत का टेका है। वहाँ के मकानो को बडे-बडे मोती है। वे मोती सव्वा-सव्वा मन के है ।५९।

अमर सुख अमर वां माया ।। अमर अवास अमर ही काया ।।
अमर सुख सेजा जां तांई ।। अमर ओसता पलटे नाही ।।६०।।

वहाँ के सभी सुख अमर है । वहाँ की सभी माया भी अमर है । वहाँ के रहनेके मकान भी अमर है । वहाँ की काया भी अमर है । वहाँ सभी सुख बिना चिंतन किए सदा आते रहते । उस संत की अवस्था अमर है । वहाँ के संत सदा युवा है । वे मृत्यूलोक समान कभी बुढे नही होते ।।।६०।।

सुख संपत अण चित्यां आवे ।। दुख दालद बंछत नही पावे ।।
सरब भोग हाजर उण धामा ।। नर नारी नेहचल ने:ह कामा ।।६१।।

वहाँ पे सुख-संपत्ती बिना चिंतन किए ही आ जाते व दु:ख-दरीद्री वंछ्ना करने पे भी नही मिलते । उस अमरधाम में सभी भोग हाजर है । वहाँ के सभी स्त्री-पुरुष निश्चल हे ने:कामी है ।।।६१।।

बांझ नार कोई कुख बंदावे ।। ओपत खपत नही वां चावे ।।
अनंताई चीज बस्त बिन पारा ।। अनंताई रिध सिध भऱ्या भंडारा ।।६२।।

जैसे मृत्यूलोक में बांझ नार के समान कोई स्त्री बच्चा न हो इसलिए कोख बंद कर देती

है मतलब वह स्त्री बच्चा जन्मे या मरे यह नही चाहती है याने जन्मणा-मरणा इस स्वभाव से मुक्त रहती है वैसे ही वहाँ के संत कुद्रती ही निश्चल व ने:कामी होते है याने जन्मणे-मरणे के परेके मुक्त स्वभाव के होते है । वहाँ पे अनंतही चीजे है । वहाँ पार नही आएगी ऐसे अनेक वस्तुएँ है । यहाँ सिर्फ नौ रिद्धी व अष्ट सिद्धी है परंतू वहाँ अनंत रिद्धी-सिद्धीयों के भंडार भरे है ।।।६२।।

आ आपणी नही चीज पराई ।। जो चावे सोही ले जाई ।।
बाळक रूप सदा हंस सारा ।। नही शत्रु नही मित्रु प्यारा ।।६३।।

वहाँ ऐसा कोई भी नही समझता की यह वस्तू अपनी है या दूसरे की है । वहाँ जिसे जो वस्तू चाहिए वह वस्तू उसे भंडारो से उपलब्ध है,वह उसे ले लेवे । वहाँ के सभी हंस हमेशा बालक के स्वभाव के रहते है । जैसे जगत में बालक का कोई शत्रु नही कोई भी मित्र नही है या कोई प्यारा नही रहता । उसीप्रकार का वहाँ के सभी संतों का स्वभाव रहता है ।।।६३।।

काम किल्याण नही कोई अेको ।। मेळ मिलाप करो सुख देखो ।।
काळ न पुंथे जुरा न झापे ।। ना कोई कोप करे नही कांपे ।।६४।।

वहाँ तीन लोकके मायाके समान काम वासना नही है या काम वासना की अतृप्ती भी नही है । ऐसे वहाँ काम व कल्याण ये एक भी नही है । वहाँ एक दूसरे से भेट करके सुख लेने की विधी है । वहाँ काल कभी नही पहूँचता तथा वहाँ बुढापा भी नही ग्रासता । वहाँ किसी का किसी पे कोप भी नही है तथा वहाँ कोप न होनेकारण कोप के डर से कोई काँपता भी नही । ।।६४।।

निद्रा रेण नही बिश्रामा ।। अे सुख हे केवळ की धामा ।।
मोत्या चोक पुरीजे सारा ।। हीरा रतन अनंत उजीयारा ।।६५।।

वहाँ शरीर को विश्राम या निंद लेने सरिखे कोई कष्ट नही है । इसलिए कष्ट के कारण यहाँ के समान शरीर थकता नही है उलटा शरीर निंद हो जाने के बाद या थकावट निकलने के बाद जैसा ताजा व आनंदित रहता वैसे सदा रहता । इसलिए विश्राम या निंद के कुद्रती ही दु:ख नही है । याने विश्राम या निंद न लेने के कुद्रती ही सुख है । कैवल्य धाम में सभी चौको में बडे-बडे मोती गाडे है । उस धाममें मोती,हिरे,रत्न,समान चीजोंका अनंत प्रकाश है । ।६५।

केईक चोक नांव अमी कुँपा ।। केईक कळ ब्रछ चोक अनूपा ।।
केई चित्रावण चोक सजीवण ।। तीन लोक मे जाको जीवण ।।६६।।

उस धाम के कई चौक अमृत से भरे हुए कुएँ के समान है । कई कल्पवृक्षोंके समान सजे हुए है वृक्षों के कई चौक जिसे उपमा नही देते आती ऐसे बने है कई चौक चिंतामणी पत्थरों से सजे है तो कई चौक संजिवणी जडीयों से सजे है मतलब जिन-जिन चीजों का

तीन लोक में भारी पुंछ है,ऐसे वहाँ के चौक अनमोल वस्तुओं से सजे हुए है ।।।६६।।

मिणीयां चोक लाल केई नामा ।। जको जड़ाव जड़यो जिण धामा ।।

अे सब चोक अष्ट प्रकारां ।। एक एक भवन की लारा ।।६७।।

वहाँ पे कितने ही चौक नागमणी,चंद्रमणी समान मणियोंके बने है । कई चौक लालके बने है । जिस नाम का चौक है वही जडाव उस चौक में जडा हुआ है । इसप्रकार से आठ चौक है । ये इसप्रकार से एक-एक चौक एक-एक मकान के साथ है ।।।६७।।

षोडस भवन नांव प्रकारी ।। सो बिध बरण सुणाऊँ सारी ।।

हीर भवन केई मिण मोताला ।। रतन भवन केई दममसलाला ।।६८।।

ऐसे सभी सोलह प्रकारके मकान है । उन सोलह मकानोंके अलग-अलग नाम है । उन सभी भवनो का वर्णन करके बताता हूँ । कित्येक हीर भवन है,कित्येक मणी भवन है,कित्येक मोती भवन है,कित्येक रत्न भवन है,कित्येक पद्मनग के मकान है तो कित्येक लाल के मकान है, ऐसे अलग-अलग मकान है । ।।६८।।

कळ ब्रछ भवन केई इम्रत धारा ।। केई चित्रावण सजीवण न्यारा ।।

ध्यान भवन भवन केइ ग्याना ।। सुख धारा समता बिध नाना ।।६९।।

अलौकिक लोकमें कई कल्पवृक्षके भवन है तो कई अमृतधाराके भवन है तो कई चिंतामणी के भवन है तो कई संजीवनीके भवन है । कई ध्यान भवन है,कई ज्ञान भवन है तो कई सुख-धारा के भवन है तो कई समता के भवन है ऐसे नाना प्रकार के भवन है ।।।६९।।

पेम फुवारा आणंद कहुं तोई ।। इण बिध नांव भवन का होई ।।

अब देह का रूप कहत हुं न्यारा ।। लील बिलास घरो घर सारा ।।७०।।

कित्येक प्रेम के फुवारों के मकान है,कित्येक आनंद के मकान है । इस तरह से सभी मकानों के नाम अलग-अलग है । वहाँ के सभी संत सभी अलग-अलग घरों मे लिला विलास करते है । अब वहाँ के देह रुप बताता हूँ ।।।७०।।

कोटक सूर रूम उजियाळा ।। सब की गळे मोतीयन की माळा ।।

ओ सुण तेज रूम अेक माही ।। असंख संख की गिणती नाही ।।७१।।

उनके एक-एक रोम में सौ लाख सूर्यो का प्रकाश प्रगटता है । ऐसा ऐसा तेज उनके एक-एक रोम में है । ऐसा असंख्य सूर्योका तेज उनके देह में है । वहाँ के सभी हंसोंके गले में मोतीयों की माला है ।।।७१।।

दोहा ।।

अगम आवाजा गेब की ।। गरज रहयो बेराट ।।

भवन भवन मे चानणो ।। बदन करे भ्रलाट ।।७२।।

वह अलौकिक बैराट गेबके अगम आवाजोंसे गरज रहा है । वहाँ के भवन-भवन में प्रकाश

है । वहाँ के सभी हंसोंका शरीर तेज से चमक रहा है ।।।७२।।

दिव्य रूप मुख भळ हळे ।। बरसे नीरमळ नूर ।।
नख चख बिच सुखराम क्हे ।। ऊँगा कोटक सूर ।।७३।।

वहाँ के हंसोंका रुप दिव्य है । उनका मुख तेजस्वी है । उनके मुखपे निर्मल तेज बरसते रहता । उनके नख से लेकर आँखोंतक करोंडो सूर्य का प्रकाश उगा ऐसा दिखते रहता ।।।७३।।

इसी झिगा मिग भवन मे ।। अरस परस दिदार ।।
नित दुलवा सुखराम क्हे ।। मोड बंध्या नर नार ।।७४।।

वहाँ के मकानोंमें हमेशा झिलमिलाहट लगी हुई दिखती । इसकारण मकानके अंदर का तथा मकानके बाहरका ऐसा अरस-परस दिखते रहता । जैसे विवाहके दिन नर-नारी दुल्हा बनते व उन्हें मोड आदि बांध के सजाए जाता,ऐसे वहाँ के हंस दुल्हे समान सदा सजे दिखते ।।।७४।।

अंमर बस्तर नित नवा ।। सदा सुगधी चीर ।।
जड़े पनंगा पेम का ।। हसताँ ढळ के हीर ।।७५।।

उनके वस्त्र नित्य नए रहते । वे वस्त्र भी अमर ही रहते । उनके ओढते में से हमेशा सुगंधी की लहरे चलती रहती । उनके देहसे सदाही प्रेमके पनंगे झरते रहते । वे हँसते तब उनके मुख से हिरे झरते रहते ।।।७५।।

अनंत सुख आगे खड़ा ।। अनंता ही लील बिलास ।।
अनंत संत केळा करे ।। वो निरभे नेहचळ बास ।।७६।।

उनके सामने अनंतही सुख खडे रहते । वहाँ के सभी संत अनंत लिलाविलास करते । वहाँके सभी संत अनंत प्रकार की क्रिडाएँ करते । वह अलौकिक लोक काल से मुक्त ऐसा निर्भय लोक है तथा यहाँ के समान अनिश्चल याने मिटनेवाला नही है ।।।७६।।

घर घर रळी बधावणा ।। घर घर मंगळाचार ।।
कामेधेन कळ ब्रछ जो ।। दूजे घर घर बार ।।७७।।

वहाँ घर-घर में बधावणे याने आनंद के उत्सव होते है तथा घर-घर में मंगलाचार याने मंगल कार्य होते है । वहाँ घर-घर में कल्पवृक्ष है तथा कामधेनू है ।।।७७।।

अमर फळ इम्रत घणा ।। नांना चीज अनूप ।।
इम्रत कुंपा नावणा ।। देही चड़े सरूप ।।७८।।

वहाँ अमर फल बहुत है । वहाँ अमृत ही अमृत है । वहाँ अनेक प्रकार की अनूप चीजे है । वहाँ अमृत के कुएँ में स्नान करते है । इसलिए उनके देह को सौंदर्य का रुप दिन-प्रतिदिन चढते रहता है ।।।७८।।

रंग राग घर घर हुवे ।। बाजे अनहद बाव ।।

सदा हरष सुखराम क्हे || ज्युं आगम मीठा ब्याव ||७९||

वहाँ घर-घर में राग-रागीन्या होते रहती । वहाँ आनंद देनेवाला सुहावना ऐसा अनहद वायू चलता । वहाँ पे जैसा यहाँ विवाह प्रसंग पहले से हर्षायमान लगता वैसा वहाँ हमेशा ही हर्ष चलते रहता ।||७९||

म्रत लोक मे पड़त हे || संतारी टक साळ ||
वां पहुँता सुखरामजी || से जीता भव काळ ||८०||

मृत्यूलोक में संत उत्पन्न होते रहते व वे सभी लौकीक लोक में न रहते अलौकीक लोक में पहूँचते। ऐसे अलौकीक लोक में पहूँचे हुए संत भवसागर व काल को जीते रहते ।८०।

अमर माया अमर सुख || अमर ही वो धाम ||
ओ मोख पंथ सुखराम क्हे || हम देख्यो रट राम ||८१||

वहाँ की माया भी अमर है । वहाँ का सुख भी अमर है तथा वह मोक्ष धाम भी अमर है । ऐसा मोक्ष का धाम हमने राम नाम का रटन करके प्राप्त किया है ।||८१||

सुखराम अधर सत्त लोक हे || अधर जमी वां जाण ||
वां दीठा आ अेथली || कर नर हात पिछाण ||८२||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है वह सतलोक अधर है,किसी भी टेके से नही है। वहाँ की जमीन भी अधर है। जैसे मनुष्य की हथेली अधर रहती उसे किसीका टेका नही रहता वैसा वहाँ वह अमरलोक देखने पे हथेली के समान बिना टेके का दिखता।८२।

गुरूबीरम सुं बीनती || बार बार प्रणाम ||
ज्यां प्रताप सुखराम क्हे || हम पाया निज धाम ||८३||

गुरु बिरमदासजी महाराज को बिनंती तथा बारबार नम्रप्रणाम है कारण गुरु बिरमदासजी के कृपासे ही हमे निजधाम मिला है । नही तो हम कालधाम में ही बारबार जन्मने-मरने के दु:ख भोगते पडे रहते थे । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।||८३||

कुंडल्यो ||

सत्तगुरूबीरम दास जी || निर धाऱ्या आधार ||
जीवां कारज देह धरी || अे सागे सीरजन हार ||
सागे सिरजण हार || अनंत गुण काहा लग गाऊँ ||
अेक जीभ मुख मांह || गुणा को पार न पाऊँ ||
सुखराम संत भल सिरजीया || साहिब को ओतार ||
सत्तगुरू बीरम दासजी || निर धाऱ्या आधार ||८४||

सतगुरु बिरमदासजी महाराज ऐसे है कि वे काल के देश से पार होने के लिए जो जो निराधार हंस है ऐसे सभी हंसो के लिए काल से मुक्त करने के लिए वे आधार है । उन्होंने जीवो को काल के जुलूमो से मुक्त करने के लिए देह धारण किया है नही तो वे

हकिकत में सिरजणहार ही है याने सृष्टी बनानेवाले परमात्मा ही है । ऐसे अपार गुणवाले सिरजणहार का मैं क्या वर्णन करुँ? मुझे उनके गुण वर्णन करने के लिए एक मुख है व मुख में जीभ भी एक ही है व उनके गुणों का वर्णन किया तो पार नही आता । इसलिए मैं उनके गुणों का पार नही पा सकता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसे संत बिरमदासजी सिरजणहार साहेब के अवतार बनके मृत्यूलोक में आए व काल से मुक्ती चाहणेवाले परंतु काल से मुक्ती पाने के लिए सामने कोई आधार नही दिखनेवाले जीवों के आधार बन गए ।।।८४।।

|| इति अलोकी ग्रंथ का भाषांतर संपूर्ण ||